1

B.A. Part – I (Honours)
Paper – II
INTRODUCTION OF METAPHYSICS & EPISTEMOLOGY

Date - 20/04/2020
Dr. Shobha Rani
Deptt. of Philosophy

हम जानते हैं, कि दर्शन का क्षेत्र अत्यन्त ही व्यापक होता है। विश्व से जुड़ी जितनी भी समस्याएं हैं, अगर उस पर दार्शनिक दृष्टिकोण से विचार किया जाए, तो वह दर्शन का विषय बन जाता है।

दूसरे शब्दों मे हम कह सकते हैं, कि जिस क्षेत्र पर दार्शनिक चिन्तन किया जाय, वह क्षेत्र दर्शन का क्षेत्र बन जाता है।

Example : → यदि हम स्कूल, कॉलेज या ऑफिस जाने के पहले यह सोचें कि हम कौन सा कपड़ा पहनें?. हम किस रास्ते से जाएँ?. हम बस से जायें, पैदल या टैक्सी या प्राइवेट गाड़ी से जायें?. आदि तो यह जितने भी प्रश्न हैं, वह दर्शन का प्रश्न नहीं है, या व्यक्तिगत जितनी भी समस्याएं हैं, वह दर्शन की समस्याएं नहीं हैं।

लेकिन हम अगर यह विचार करें, कि यह विश्व कैसे बना?. क्यों बना?. कौन बनाया?. हम इस विश्व में कैसे आए?. हमें किसने बनाया?. क्यों बनाया?. प्रकृति क्या है?. जगत की मूल समस्या क्या है। जगत के परे भी कोई सत्य (वस्तु) है?. जीवन का लक्ष्य क्या है?. क्या सत्य है, क्या असत्य?. आदि समस्या ही दर्शन की मूल समस्या है, अर्थात "क्यों" और कैसे की समस्या ही हमारे दर्शन की मूल समस्या है।

इस दृष्टि से दर्शन का क्षेत्र अत्याधिक विस्तृत है, और दार्शनिक समस्याओं का वर्गीकरण बहुत ही मुश्किल भी, फिर भी दर्शन की प्रमुख

Scanned by CamScanner

समस्याओं का वर्गीकरण विद्वानों ने इस प्रकार किया है। यहाँ हम तत्वमीमांसा एवं ज्ञानमीमांसा जो दर्शन की शाखाएं हैं, उनकी विस्तृत चर्चा करेंगे।

(1.) तत्वमीमांसा – (Metaphysics)

"तत्वमीमांसा" दर्शन की एक महत्वपूर्ण शाखा की श्रेणी में आता है। दर्शन की इस शाखा के अन्तर्गत तत्व संबंधी प्रश्नों की मीमांसा या विवेचन किया जाता है। अंग्रेजी में इसे "मेटाफिजिक्स" (Metaphysics) कहा जाता है। "Metaphysics" दो शब्दों के योग से बना है "Meta" + "Physics"। जहाँ "Meta" का अर्थ है → "beyond" यानी "परे" और "Physics" का तात्पर्य है → "The Science of The Physical world"; अर्थात् भौतिक जगत का विज्ञान।

इस प्रकार "Metaphysics" भौतिक विज्ञान से परे या भौतिक विज्ञान के पश्चात का अध्ययन है। हम यह कह सकते हैं, कि जहाँ भौतिक विज्ञान की समाप्ति होती है, वहीं से तत्वमीमांसा (Metaphysics) की शुरुआत होती है।

तत्वमीमांसा में मूल तत्व अर्थात् आदि कारण की खोज होती है। आदि कारण उसे कहते हैं, जिसका कोई कारण नहीं होता है, पर वह विश्व के सारे कारणों का आधार (Base) होता है। उस मूल कारण जिसे हमारे दर्शन में Ultimate Reality (परम सत्य) कहा जाता है। उस परम तत्व की प्रकृति क्या है?. क्या वह इस विश्व (जगत) के विशिष्ट

Scanned by CamScanner

पदार्थों की तरह ही है, या उनसे उनका स्वरूप अलग है ? "तत्व-संबंधी" सभी प्रश्नों का इसमें विचार किया जाता है। तत्वमीमांसा भी दर्शन के ही अन्तर्गत है, पर दर्शन में इसके अतिरिक्त अन्य समस्याओं का भी विचार किया जाता है। कुछ दार्शनिक तत्व-मीमांसा को सामान्य दर्शन मानते हैं, जिसमें "तत्व" के अलावे अन्य दार्शनिक समस्याओं के समाधान का भी चिन्तन किया जाता है।

(2.) ज्ञानमीमांसा (Epistemology) : →

"ज्ञानमीमांसा" को हमारे दर्शन में दूसरे शाखा के रूप में रखा गया है। "ज्ञान-मीमांसा" ज्ञान-संबंधी समस्याओं की दार्शनिक विवेचना है। ज्ञान क्या है ? ज्ञान का स्वरूप क्या है ?, क्या साधन है - ज्ञान प्राप्ति के ?, ज्ञान की सीमाएं क्या हैं ?, आदि इन सारे प्रश्नों का जवाब हमारे दर्शन की इस शाखा से प्राप्त होते हैं, या मिलते हैं। "ज्ञानमीमांसा" को अंग्रेजी में "Epistemology" कहा जाता है। "Epistemology" दो शब्दों के योग से बना है — "Epistemo" तथा "Logosi"। जहाँ "Epistmo" का अर्थ है — "Knowledge" अर्थात् ज्ञान। तथा "Logos" का अर्थ है — "Theory" अर्थात् सिद्धान्त या मीमांसा। इस प्रकार "Epistemology" का शाब्दिक अर्थ हुआ → "ज्ञान की मीमांसा या ज्ञान का सिद्धान्त"।

Scanned by CamScanner

दार्शनिकों के अनुसार तत्वमीमांसा सम्पूर्ण विश्व के एक कारण को खोजने का, उसे जानने का प्रयत्न करती है। लेकिन दार्शनिकों को उन समस्याओं और सीमाओं को समझना होगा, जो उसके ज्ञान या बोध में बाधक हो। दार्शनिक को यह समझना भी जरूरी है, कि उसके ज्ञान की सीमा क्या है। ज्ञान की प्रामाणिकता कैसे सिद्ध होती है। आदि प्रश्नों को ज्ञानमीमांसा के अन्तर्गत उठाया जाता है।

Epistemology के अन्तर्गत दार्शनिकों के विभिन्न दृष्टिकोण मिलते हैं। कुछ दार्शनिकों के अनुसार ज्ञान का स्वरूप बौद्धिक है। मानव ज्ञान का स्रोत बुद्धि है, अर्थात् बुद्धि ही ज्ञान प्राप्ति का साधन है। समस्त प्रकार के ज्ञान बुद्धि में ही निहित है। बुद्धि ही हमारे ज्ञान की सीमा है। अर्थात् बुद्धि से परे या बुद्धि के अलावे किसी अन्य स्रोत से ज्ञान की प्राप्ति संभव नहीं। यह विचारधारा दर्शन में बुद्धिवादी विचारधारा कहलाती है।

दूसरी ओर ज्ञान की अनुभववादी विचारधारा है। अनुभववादी विचारकों के अनुसार ज्ञान का स्वरूप ऐन्द्रिक है। इन्द्रिय अनुभव ही ज्ञान का स्रोत है। और यही ज्ञान की सीमा है। इसके अनुसार "समस्त ज्ञान का स्रोत अनुभव है, और अनुभव में इसका अन्त" (All Knowledge begins with experience and ends with it), अर्थात् अनुभव के पहले ज्ञान असम्भव है, और अनुभव की समाप्ति में ज्ञान भी समाप्त हो जाता है।

Scanned by CamScanner

कुछ विचारकों के अनुसार बुद्धि और इन्द्रियानुभव के अतिरिक्त मानवीय ज्ञान का एक और सबसे महत्वपूर्ण पहलू है —— "अन्तःप्रज्ञा"। इसे अन्तःप्रज्ञावाद भी कहा जाता है। अन्तःप्रज्ञावादियों के अनुसार मनुष्य का अनुभविक ज्ञान दो प्रकार का होता है — बाह्य और आन्तरिक। आन्तरिक ज्ञान अन्तःइन्द्रिय से प्राप्त होता है। जबकि बाह्य ज्ञान या अनुभव पंच ज्ञानेन्द्रियों —— आँख, नाक, कान, मुख और त्वचा से प्राप्त होता है। जैसे 'आँख' से देखने का, 'कान' से सुनने का नाक से सूंघकर, मुख से स्वाद का तथा त्वचा से स्पर्श का ज्ञान प्राप्त होता है।

"अन्तःप्रज्ञावाद" से पहले ज्ञान की एक और विचारधारा सामने आती है — "समीक्षावाद" या समन्वयवाद विचारधारा। इस विचारधारा के अनुसार ज्ञान की बुद्धिवादी एवं अनुभववादी दोनों ही विचारधारायें एकांगी हैं, क्योंकि दोनों ही विचारधारायें मानवीय ज्ञान के एक पहलू को सामने रखती हैं। मानव के पास बुद्धि भी है, और इन्द्रियाँ भी। बुद्धिवादी विचारधारा मनुष्य के इन्द्रियानुभव पहलू को नकार देते हैं। और अनुभववादी बौद्धिक पहलू को नकार देते हैं। लेकिन बुद्धि और अनुभव दोनों ही ज्ञान के लिए आवश्यक हैं। इसके अनुसार मानवीय ज्ञान में बुद्धि और इन्द्रियानुभव दोनों आवश्यक पहलू हैं, दोनों में से एक के भी बिना ज्ञान प्राप्त करना असंभव है। ज्ञान की यह समीक्षावादी विचारधारा भी दर्शन में पूर्ण रूप से मान्य नहीं रही, फिर भी ज्ञान के क्षेत्र में तीनों विचारधारा महत्वपूर्ण स्थान रखती है।